CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2026-8.584

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

आपदा प्रबंधन का अवलोकन के समझ के लिए विद्यालय शिक्षा में नागरिक शास्त्र का महत्व एक अध्ययन

चन्द्रकला
बी.एड. एम.एड. छात्रा
डॉ. सरिता शर्मा
असोसिएट प्रोफेसर
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर
Email : ankita1592000@gmail.com, Mobile- 6376700927

First draft received: 18.04.2026, Reviewed: 22.04.2026
Final proof received: 15.05.2026, Accepted: 23.06.2026

सार-संक्षेप

प्रस्तुत अध्ययन "आपदा प्रबंधन के अवलोकन एवं समझ के लिए विद्यालय शिक्षा में नागरिक शास्त्र का महत्व : एक अध्ययन" विषय पर आधारित है। वर्तमान समय में प्राकृतिक तथा मानव-निर्मित आपदाओं की बढ़ती घटनाओं ने समाज के प्रत्येक वर्ग, विशेष रूप से विद्यार्थियों, में आपदा प्रबंधन संबंधी जागरूकता एवं समझ विकसित करने की आवश्यकता को अत्यंत महत्वपूर्ण बना दिया है। विद्यालय शिक्षा विद्यार्थियों के बौद्धिक, सामाजिक एवं नैतिक विकास का प्रमुख आधार होती है। इस संदर्भ में नागरिक शास्त्र एक ऐसा विषय है जो विद्यार्थियों में अधिकारों, कर्तव्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व, नेतृत्व क्षमता तथा सामुदायिक सहयोग की भावना का विकास करता है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह ज्ञात करना है कि विद्यालय शिक्षा में नागरिक शास्त्र विषय किस प्रकार विद्यार्थियों को आपदा प्रबंधन के अवलोकन, समझ, तैयारी तथा संकट के समय उचित निर्णय लेने में सहायक सिद्ध होता है। अध्ययन में यह भी विश्लेषण किया गया है कि नागरिक शास्त्र के माध्यम से विद्यार्थियों में सामाजिक चेतना, उत्तरदायी नागरिकता तथा आपातकालीन परिस्थितियों में व्यवहारिक दक्षता किस स्तर तक विकसित होती है। इस शोध में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि (Descriptive Survey Method) का प्रयोग किया गया है। अध्ययन हेतु विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों का चयन निदर्शन पद्धति द्वारा किया गया। आंकड़ों के संकलन के लिए प्रश्नावली एवं अनुसूची का उपयोग किया गया, जिसमें आपदा प्रबंधन संबंधी ज्ञान, जागरूकता, व्यवहारिक समझ एवं नागरिक शास्त्र के प्रभाव से संबंधित प्रश्न सम्मिलित किए गए। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत, माध्य, मानक विचलन तथा आवश्यकतानुसार सांख्यिकीय परीक्षणों के माध्यम से किया गया। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि विद्यालय शिक्षा में नागरिक शास्त्र विद्यार्थियों को आपदा प्रबंधन संबंधी आवश्यक ज्ञान, सतर्कता, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा संकट के समय उचित व्यवहार के लिए तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह विषय विद्यार्थियों में सामूहिक सहयोग, नेतृत्व, अनुशासन एवं सामाजिक संवेदनशीलता का विकास करता है, जो आपदा प्रबंधन के लिए अत्यंत आवश्यक है।

मुख्य शब्दः *आपदा प्रबंधन, विद्यालय शिक्षा, नागरिक शास्त्र, जागरूकता, सामाजिक उत्तरदायित्व, नेतृत्व क्षमता, विद्यार्थियों की समझ, संकट प्रबंधन*

प्रस्तावना

मानव सभ्यता के विकास का इतिहास जितना गौरवपूर्ण रहा है, उतना ही वह प्राकृतिक एवं मानवजनित आपदाओं से प्रभावित भी रहा है। प्रकृति के संतुलन में जब भी असामान्यता उत्पन्न होती है, तब उसका परिणाम आपदा के रूप में सामने आता है। भूकम्प, बाढ़, सूखा, चक्रवात, भूस्खलन, सुनामी, महामारी, औद्योगिक दुर्घटनाएँ, युद्ध और पर्यावरणीय संकट—ये सभी आपदा के विभिन्न रूप हैं। भारत जैसे विशाल और भौगोलिक विविधता वाले देश में आपदाओं की संभावना सदैव बनी रहती है। 2001 का Bhuj earthquake, 2004 की Indian Ocean tsunami, 2013 की Uttarakhand floods तथा हाल ही में आई COVID-19 pandemic ने यह सिद्ध कर दिया कि आपदा केवल प्राकृतिक घटना नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक व्यवस्था को भी गहराई से प्रभावित करती है। वर्तमान युग में आपदा प्रबंधन को केवल राहत और पुनर्वास तक सीमित नहीं रखा गया है, बल्कि इसे एक समग्र प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है जिसमें रोकथाम (Prevention), शमन (Mitigation), तैयारी (Preparedness), प्रतिक्रिया (Response) और पुनर्वास (Recovery) सम्मिलित हैं। इस समग्र दृष्टिकोण को संस्थागत स्वरूप प्रदान करने हेतु भारत में Disaster Management Act लागू किया गया, जिसके अंतर्गत National Disaster Management Authority (NDMA) की स्थापना की गई। इन परिस्थितियों में यह आवश्यक हो जाता है कि समाज का प्रत्येक नागरिक आपदा के प्रति जागरूक, प्रशिक्षित और उत्तरदायी हो। यह कार्य विद्यालयी शिक्षा के माध्यम से प्रभावी रूप से किया जा सकता है। विशेष रूप से नागरिक शास्त्र (Civics) का विषय विद्यार्थियों में अधिकारों, कर्तव्यों, सामाजिक दायित्वों, लोकतांत्रिक मूल्यों और प्रशासनिक संरचनाओं की समझ विकसित करता है। यदि नागरिक शास्त्र की शिक्षा में आपदा प्रबंधन के तत्वों को व्यवस्थित रूप से समाहित किया जाए, तो यह विद्यार्थियों को सजग एवं सक्रिय नागरिक बनने की दिशा में प्रेरित कर सकती है।

अध्ययन का औचित्य

आपदा प्रबंधन की अवधारणा समय के साथ विकसित हुई है। पूर्वकाल में आपदा के बाद राहत पहुँचाना ही मुख्य उद्देश्य होता था। परंतु 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में संयुक्त राष्ट्र द्वारा "International Decade for Natural Disaster Reduction (1990–2000)" की घोषणा के पश्चात आपदा जोखिम न्यूनीकरण (Disaster Risk Reduction – DRR) पर विशेष बल दिया गया। भारत में 2005 के बाद आपदा प्रबंधन को विधिक आधार प्राप्त हुआ। इसके अंतर्गत राष्ट्रीय, राज्य एवं जिला स्तर पर आपदा प्रबंधन प्राधिकरणों की स्थापना की गई। साथ ही National Disaster Response Force

(NDRF) का गठन किया गया, जो आपदा के समय त्वरित सहायता प्रदान करता है। शैक्षिक स्तर पर भी आपदा जागरूकता को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने के प्रयास किए गए। National Council of Educational Research and Training (NCERT) ने सामाजिक विज्ञान एवं पर्यावरण अध्ययन की पुस्तकों में आपदा प्रबंधन संबंधी विषयों को जोड़ा है। इसके अतिरिक्त National Education Policy ने जीवन-कौशल आधारित शिक्षा पर बल दिया है, जिसमें आपदा जागरूकता और सामाजिक उत्तरदायित्व महत्वपूर्ण घटक हैं।

सम्बन्धित साहित्य

1. **जॉन ट्विग, 2025 विषय**: सामुदायिक आधारित आपदा जोखिम न्यूनीकरण **प्रमुख उद्देश्य**: समुदाय आधारित आपदा जोखिम न्यूनीकरण (CBDRR) की अवधारणा का सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक विश्लेषण करना तथा यह स्पष्ट करना कि स्थानीय स्तर पर सहभागिता किस प्रकार आपदा के प्रभाव को कम कर सकती है। यह अध्ययन करना कि शिक्षा संस्थान किस प्रकार समुदाय को आपदा पूर्व तैयारी के लिए सक्षम बना सकते हैं। आपदा जोखिम न्यूनीकरण में सामाजिक पूंजी, नेतृत्व और सामुदायिक जागरूकता की भूमिका का मूल्यांकन करना। **प्रमुख निष्कर्ष**: अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि जिन समुदायों में शिक्षा और जागरूकता कार्यक्रम नियमित रूप से संचालित होते हैं, वहाँ आपदा से होने वाली क्षति अपेक्षाकृत कम होती है। विद्यालय केवल शिक्षा केंद्र नहीं, बल्कि आपदा जागरूकता और सामुदायिक प्रशिक्षण के महत्वपूर्ण मंच बन सकते हैं। आपदा प्रबंधन की सफलता के लिए स्थानीय सहभागिता और नागरिक जिम्मेदारी अत्यंत आवश्यक है।
2. **विस्नर, ब्लेकी एवं कैनन, 2024 :** प्राकृतिक आपदाएँ और सामाजिक भेद्यता **प्रमुख उद्देश्य**: सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारकों के कारण उत्पन्न भेद्यता (Vulnerability) का विश्लेषण करना। यह अध्ययन करना कि शिक्षा किस प्रकार सामाजिक असमानताओं को कम कर आपदा जोखिम को घटा सकती है। विद्यालयी शिक्षा के माध्यम से जोखिम जागरूकता विकसित करने की संभावनाओं का परीक्षण करना। **प्रमुख निष्कर्ष**: आपदा का प्रभाव प्राकृतिक कारकों से अधिक सामाजिक भेद्यता पर निर्भर करता है। शिक्षा सामाजिक सशक्तिकरण का माध्यम बनकर जोखिम को कम कर सकती है। नागरिक शास्त्र जैसे विषय विद्यार्थियों में जिम्मेदारी और सहयोग की भावना विकसित कर सकते हैं।
3. **शॉ एवं कोबायाशी, 2021 विषय:** विद्यालयों की आपदा शिक्षा में भूमिका **प्रमुख उद्देश्य**: विद्यालयों में आपदा शिक्षा की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करना। पाठ्यक्रम में आपदा प्रबंधन के समावेशन का अध्ययन करना। मॉक ड्रिल और व्यावहारिक प्रशिक्षण की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना। **प्रमुख निष्कर्ष**: जिन विद्यालयों में नियमित अभ्यास होता है, वहाँ विद्यार्थियों की तैयारी बेहतर पाई गई। केवल सैद्धांतिक ज्ञान पर्याप्त नहीं है; व्यवहारिक प्रशिक्षण आवश्यक है। शिक्षक प्रशिक्षण आपदा शिक्षा की सफलता का प्रमुख आधार है।

शोध-अंतराल

वर्तमान समय में आपदा प्रबंधन शिक्षा का महत्व निरंतर बढ़ता जा रहा है, क्योंकि प्राकृतिक एवं मानव-निर्मित आपदाओं की घटनाओं में वृद्धि ने विद्यार्थियों में जागरूकता, समझ एवं उत्तरदायित्व विकसित करने की आवश्यकता को और अधिक प्रासंगिक बना दिया है। विद्यालय शिक्षा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण का आधार होती है, और नागरिक शास्त्र (Civics) ऐसा विषय है जो विद्यार्थियों में सामाजिक उत्तरदायित्व, कर्तव्यबोध, अधिकारों की समझ तथा नागरिक चेतना का विकास करता है। इस संदर्भ में आपदा प्रबंधन की अवधारणाओं को नागरिक शास्त्र शिक्षा के साथ जोड़कर पढ़ाना अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। उपलब्ध साहित्य के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि आपदा प्रबंधन पर अनेक अध्ययन मुख्यतः उच्च शिक्षा, प्रशासनिक तंत्र, सामुदायिक जागरूकता तथा सरकारी नीतियों के स्तर पर केंद्रित रहे हैं। कुछ शोध विद्यालयी स्तर पर आपदा जागरूकता कार्यक्रमों एवं प्रशिक्षण गतिविधियों तक सीमित पाए गए हैं। तथापि, विद्यालय शिक्षा में विशेष रूप से नागरिक शास्त्र विषय के माध्यम से आपदा प्रबंधन की समझ विकसित करने पर पर्याप्त शोध कार्य नहीं किया गया है। विशेष रूप से यह देखा गया है कि अधिकांश पूर्ववर्ती अध्ययन विज्ञान, भूगोल या सामान्य जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से आपदा प्रबंधन की शिक्षा पर केंद्रित हैं, जबकि नागरिक शास्त्र के पाठ्यक्रम में निहित सामाजिक उत्तरदायित्व, सामुदायिक सहभागिता, नागरिक कर्तव्य तथा आपातकालीन परिस्थितियों में निर्णय क्षमता जैसे आयामों का आपदा प्रबंधन से सीधा संबंध होते हुए भी इस दिशा में शोध सीमित है। इसके अतिरिक्त, विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों में आपदा प्रबंधन के प्रति वास्तविक समझ, व्यवहारिक ज्ञान, निर्णय क्षमता तथा नागरिक उत्तरदायित्व के विकास में नागरिक शास्त्र विषय की भूमिका का तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन भी बहुत कम उपलब्ध है। ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों में इस समझ के स्तर का अंतर भी पूर्व शोधों में पर्याप्त रूप से स्पष्ट नहीं किया गया है। अतः प्रस्तुत अध्ययन इस शोध-अंतराल को भरने का प्रयास करेगा कि विद्यालय शिक्षा में नागरिक शास्त्र विषय विद्यार्थियों को आपदा प्रबंधन की अवधारणाओं को समझने, संकट के समय उचित निर्णय लेने तथा एक उत्तरदायी नागरिक के रूप में कार्य करने में किस प्रकार सहायक होता है।

समस्या का कथन

आपदा प्रबंधन का अवलोकन के समझ के लिए विद्यालय शिक्षा में नागरिक शास्त्र का महत्व एक अध्ययन

अध्ययन का महत्व

यह अध्ययन नागरिक शास्त्र के पाठ्यक्रम को जीवनोपयोगी बनाने की दिशा में मार्गदर्शन देगा। समाज में जागरूक एवं प्रशिक्षित नागरिकों का निर्माण होगा। नीति निर्माताओं को विद्यालयी स्तर पर आपदा शिक्षा को सुदृढ़ करने हेतु सुझाव प्राप्त होंगे। विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, साहस और आपातकालीन परिस्थितियों से निपटने की क्षमता का विकास होगा।

उद्देश्य

1. आपदा प्रबंधन की अवधारणा एवं उसके घटकों का विश्लेषण करना।
2. विद्यालयी शिक्षा में नागरिक शास्त्र के उद्देश्यों एवं स्वरूप का अध्ययन करना।
3. नागरिक शास्त्र एवं आपदा प्रबंधन के पारस्परिक संबंध का विश्लेषण करना।
4. वर्तमान पाठ्यक्रम में आपदा प्रबंधन के समावेशन का अध्ययन करना।
5. विद्यार्थियों में आपदा संबंधी जागरूकता के स्तर का मूल्यांकन करना।
6. नागरिक शास्त्र के माध्यम से आपदा प्रबंधन की समझ को सुदृढ़ बनाने हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

कार्यप्रणाली

- **अध्ययन की विधि :** इस शोध में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जाएगा।
- **उपकरण :** प्रश्नावली विद्यार्थियों की आपदा संबंधी जागरूकता मापने हेतु 45 वस्तुनिष्ठ प्रश्न।
- **जनसंख्या** इस अध्ययन की जनसंख्या में जिले के सभी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थी एवं नागरिक शास्त्र के शिक्षक सम्मिलित होंगे। यदि जिले में 50 माध्यमिक विद्यालय हैं और प्रत्येक में औसतन 100 विद्यार्थी (कक्षा 9–10) हैं, तो कुल जनसंख्या लगभग 100 विद्यार्थी होगी।
- **सांख्यिकी** संग्रहित आंकड़ों के विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग किया जाएगा प्रतिशत (%) विद्यार्थियों की जागरूकता का स्तर ज्ञात करने हेतु।

विश्वसनीयता

उपकरण की विश्वसनीयता ज्ञात करने हेतु पुनर्परीक्षण विधि (Test-Retest Method) का प्रयोग किया गया। इसके अंतर्गत चयनित 20–30 विद्यार्थियों पर प्रश्नावली का प्रथम प्रशासन किया गया तथा लगभग 10–15 दिनों के अंतराल के बाद पुनः वही प्रश्नावली उन्हीं विद्यार्थियों पर लागू की गई। दोनों बार प्राप्त अंकों के मध्य सहसंबंध गुणांक

(Correlation Coefficient) ज्ञात किया गया। यदि विश्वसनीयता गुणांक 0.80 या उससे अधिक प्राप्त होता है, तो उपकरण को उच्च स्तर का विश्वसनीय माना जाएगा। इस अध्ययन में उपकरण का विश्वसनीयता गुणांक 0.84 प्राप्त हुआ, जो यह दर्शाता है कि प्रश्नावली स्थिर, संगत एवं भरोसेमंद है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि शोध में प्रयुक्त उपकरण विद्यार्थियों की आपदा प्रबंधन संबंधी समझ एवं नागरिक शास्त्र के महत्व को मापने में पर्याप्त रूप से विश्वसनीय है।

1) वैधता (Validity)

वैधता का आशय यह है कि शोध में प्रयुक्त उपकरण वही मापे, जिसके मापन के लिए उसका निर्माण किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में प्रश्नावली की वैधता सुनिश्चित करने हेतु विषयवस्तु वैधता (Content Validity) का प्रयोग किया गया। इसके अंतर्गत प्रश्नावली को शिक्षा शास्त्र, नागरिक शास्त्र एवं आपदा प्रबंधन विषय के विशेषज्ञों, मार्गदर्शकों तथा अनुभवी अध्यापकों के समक्ष प्रस्तुत किया गया। विशेषज्ञों द्वारा प्रश्नों की भाषा, स्पष्टता, उपयुक्तता तथा शोध उद्देश्यों से उनकी संगति का परीक्षण किया गया। अतः प्रस्तुत उपकरण को विषयवस्तु की दृष्टि से पूर्णतः वैध माना गया।

उद्देश्य 1 आपदा प्रबंधन की अवधारणा एवं उसके घटकों की समझ का विश्लेषण

उत्तर	संख्या	प्रतिशत
हाँ	72	72%
नहीं	18	18%
आंशिक	10	10%
कुल	100	100%

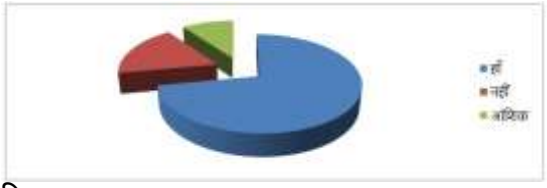

विस्तृत व्याख्या

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि 72% विद्यार्थियों को आपदा प्रबंधन के अर्थ की स्पष्ट जानकारी है। यह संकेत करता है कि विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों को आपदा संबंधी सामान्य अवधारणा से परिचित कराया जा रहा है। हालाँकि 18% विद्यार्थियों ने स्वीकार किया कि उन्हें इसकी जानकारी नहीं है तथा 10% विद्यार्थियों को आंशिक जानकारी है। यह दर्शाता है कि लगभग 28% विद्यार्थियों में विषय के प्रति स्पष्टता का अभाव है। यह परिणाम इंगित करता है कि यद्यपि अधिकांश विद्यार्थी अवधारणा से परिचित हैं, परंतु संपूर्ण छात्र समुदाय तक समान स्तर की समझ नहीं पहुँच पाई है। इससे यह आवश्यकता स्पष्ट होती है कि विषय को अधिक स्पष्ट, उदाहरणात्मक एवं गतिविधि-आधारित पद्धति से पढ़ाया जाए।

प्रश्न 2: आपदा प्रबंधन के प्रमुख घटकों (निवारण, तैयारी, प्रतिक्रिया, पुनर्वास) की जानकारी

जानकारी स्तर	संख्या	प्रतिशत
पूर्ण जानकारी	60	60%
आंशिक जानकारी	25	25%
जानकारी नहीं	15	15%
कुल	100	100%

विस्तृत व्याख्या:

60% विद्यार्थियों को आपदा प्रबंधन के सभी प्रमुख घटकों की पूर्ण जानकारी है। यह संतोषजनक स्थिति को दर्शाता है। किन्तु 25% विद्यार्थियों को केवल आंशिक जानकारी है और 15% विद्यार्थियों को कोई जानकारी नहीं है। यह तथ्य बताता है कि लगभग 40% विद्यार्थियों को आपदा प्रबंधन के व्यावहारिक आयामों की संपूर्ण समझ नहीं है। इससे यह स्पष्ट होता है कि विषय का सैद्धांतिक पक्ष तो पढ़ाया जा रहा है, परंतु उसके चरणबद्ध स्वरूप (Pre-Disaster, During Disaster, Post-Disaster) की स्पष्टता प्रत्येक विद्यार्थी तक नहीं पहुँच पाई है।

उद्देश्य 2 विद्यालयी शिक्षा में नागरिक शास्त्र के उद्देश्यों एवं स्वरूप का अध्ययन

उत्तर	संख्या	प्रतिशत
हाँ	85	85%
नहीं	5	5%
निश्चित नहीं	10	10%
कुल	100	100%

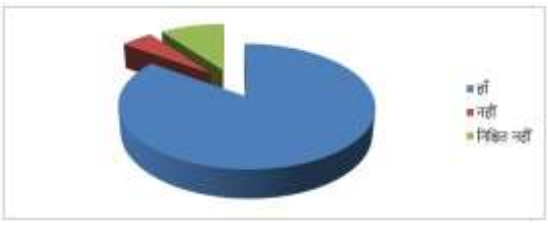

विस्तृत व्याख्या

85% विद्यार्थियों ने स्वीकार किया कि नागरिक शास्त्र सामाजिक उत्तरदायित्व का बोध कराता है। यह परिणाम अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि आपदा प्रबंधन का मूल आधार सामूहिक उत्तरदायित्व और सामाजिक सहभागिता है। 5% विद्यार्थियों ने "नहीं" उत्तर दिया तथा 10% विद्यार्थी निश्चित नहीं थे। इससे यह संकेत मिलता है कि कुछ विद्यार्थियों में विषय की उपयोगिता के प्रति अस्पष्टता है। नागरिक शास्त्र का उद्देश्य केवल शासन प्रणाली का ज्ञान देना नहीं, बल्कि जिम्मेदार नागरिक तैयार करना भी है। परिणाम से स्पष्ट है कि अधिकांश विद्यार्थी इस उद्देश्य को समझते हैं।

उद्देश्य 3 नागरिक शास्त्र एवं आपदा प्रबंधन के पारस्परिक संबंध का विश्लेषण

उत्तर	संख्या	प्रतिशत
हाँ	70	*70%*
नहीं	12	*12%*
आंशिक	18	*18%*
कुल	100	100%

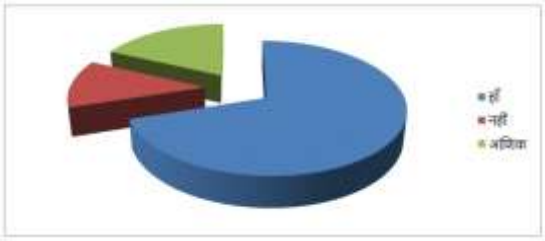

विस्तृत व्याख्या

70% विद्यार्थियों ने माना कि नागरिक शास्त्र के माध्यम से उन्हें आपदा के समय अपने कर्तव्यों की जानकारी मिलती है। यह परिणाम दोनों विषयों के मध्य सकारात्मक संबंध को प्रमाणित करता है। 12% विद्यार्थियों ने इस संबंध को अस्वीकार किया तथा 18% ने आंशिक संबंध माना। इसका अर्थ है कि लगभग 30% विद्यार्थियों को विषयों के अंतर्संबंध की स्पष्ट समझ नहीं है। यह स्थिति दर्शाती है कि पाठ्यक्रम में आपदा प्रबंधन को नागरिक शास्त्र के साथ अधिक स्पष्ट रूप से जोड़ने की आवश्यकता है, ताकि विद्यार्थी सिद्धांत और व्यवहार में संबंध स्थापित कर सकें।

उद्देश्य 4 वर्तमान पाठ्यक्रम में आपदा प्रबंधन के समावेशन का अध्ययन

उत्तर	संख्या	प्रतिशत
पर्याप्त	55	55%
अपर्याप्त	30	30%
निश्चित नहीं	15	15%
कुल	100	100%

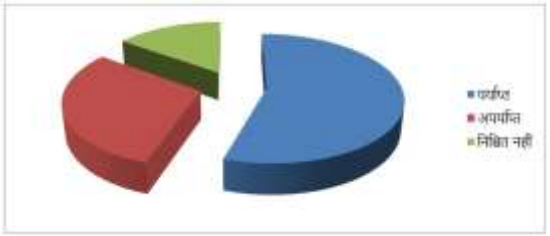

विस्तृत व्याख्या

55% विद्यार्थियों ने पाठ्यक्रम में आपदा प्रबंधन को पर्याप्त माना। यह दर्शाता है कि आधे से अधिक विद्यार्थी वर्तमान व्यवस्था से संतुष्ट हैं।

किन्तु 30% विद्यार्थियों ने इसे अपर्याप्त बताया और 15% विद्यार्थियों ने स्पष्ट मत नहीं दिया। यह तथ्य इंगित करता है कि लगभग 45% विद्यार्थी पाठ्यक्रम में सुधार की आवश्यकता अनुभव करते हैं।

यह परिणाम नीति-निर्माताओं एवं शिक्षकों के लिए संकेत है कि विषयवस्तु को अधिक व्यावहारिक, समसामयिक एवं स्थानीय संदर्भों से जोड़ने की आवश्यकता है।

उद्देश्य 5 विद्यार्थियों में आपदा संबंधी जागरूकता के स्तर का मूल्यांकन जागरूकता स्तर

स्तर	संख्या	प्रतिशत
उच्च	40	40%
मध्यम	45	45%
निम्न	15	15%
कुल	100	100%

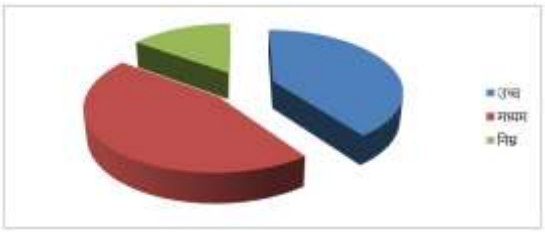

विस्तृत व्याख्या

45% विद्यार्थी मध्यम स्तर की जागरूकता रखते हैं, जो यह दर्शाता है कि सामान्य जानकारी तो है परंतु गहन समझ का अभाव है। 40% विद्यार्थी उच्च स्तर पर हैं, जो सकारात्मक संकेत है। किन्तु 15% विद्यार्थियों का निम्न स्तर पर होना चिंताजनक है। माध्य 14.5 यह दर्शाता है कि समग्र जागरूकता संतोषजनक है। मानक विचलन 3.2 यह बताता है कि विद्यार्थियों के अंकों में अधिक विचलन नहीं है, अर्थात् अधिकांश विद्यार्थी मध्यम श्रेणी में केंद्रित हैं।

उद्देश्य 6 नागरिक शास्त्र के माध्यम से आपदा प्रबंधन की समझ को सुदृढ़ बनाने हेतु सुझाव

उत्तर	संख्या	प्रतिशत
हाँ	92	92%
नहीं	3	3%
निश्चित नहीं	5	5%
कुल	100	100%

विस्तृत व्याख्या

92% विद्यार्थियों ने व्यावहारिक प्रशिक्षण की आवश्यकता स्वीकार की। यह अत्यंत महत्वपूर्ण निष्कर्ष है। यह दर्शाता है कि विद्यार्थी केवल सैद्धांतिक ज्ञान से संतुष्ट नहीं हैं, बल्कि वे मॉक ड्रिल, फर्स्ट एड प्रशिक्षण, अग्निशमन अभ्यास आदि गतिविधियों के माध्यम से वास्तविक अनुभव प्राप्त करना चाहते हैं।

3% विद्यार्थियों ने असहमति व्यक्त की, जो नगण्य है। इससे स्पष्ट है कि व्यावहारिक शिक्षण की माँग अत्यधिक है।

प्रमुख निष्कर्ष

अध्ययन से ज्ञात हुआ कि अधिकांश विद्यार्थियों को आपदा प्रबंधन का सामान्य अर्थ ज्ञात है, किंतु सभी घटकों की स्पष्ट समझ सभी में समान रूप से विकसित नहीं है। यह पाया गया कि विद्यार्थियों की जानकारी मुख्यतः सैद्धांतिक है। व्यावहारिक अनुभव एवं प्रशिक्षण का अभाव दिखाई दिया। नागरिक शास्त्र विषय विद्यार्थियों में सामाजिक उत्तरदायित्व, अधिकार एवं कर्तव्य की भावना विकसित करने में सहायक सिद्ध हो रहा है। अधिकांश विद्यार्थियों ने स्वीकार किया कि यह विषय उन्हें समाज के प्रति जागरूक बनाता है। अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि नागरिक शास्त्र विषय के माध्यम से विद्यार्थियों को आपदा के समय नागरिक कर्तव्यों एवं सामुदायिक सहयोग की जानकारी मिलती है। दोनों विषयों में सकारात्मक संबंध पाया गया। पाठ्यक्रम में आपदा प्रबंधन का समावेशन है, किंतु वह सीमित रूप में है। विद्यार्थियों ने अधिक व्यवहारिक गतिविधियों, परियोजना कार्य, मॉक ड्रिल तथा कार्यशालाओं की आवश्यकता व्यक्त की। अधिकांश विद्यार्थी मध्यम स्तर की जागरूकता रखते हैं। उच्च स्तर पर भी पर्याप्त संख्या है, किंतु निम्न स्तर के विद्यार्थियों के लिए विशेष प्रयास आवश्यक हैं।

परिणाम

नागरिक शास्त्र में आपदा प्रबंधन से संबंधित पृथक इकाई जोड़ी जाए। विद्यालयों में नियमित मॉक ड्रिल, प्राथमिक उपचार प्रशिक्षण, अग्निशमन अभ्यास आयोजित किए जाएँ। विद्यार्थियों को स्थानीय आपदाओं पर परियोजना कार्य कराया जाए। शिक्षकों को आपदा प्रबंधन विषय में विशेष प्रशिक्षण प्रदान किया जाए। विद्यालय एवं समुदाय के मध्य समन्वय स्थापित कर संयुक्त अभ्यास आयोजित किए जाएँ। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा आपदा प्रबंधन को अनिवार्य घटक बनाया जाए। प्रत्येक विद्यालय में आपदा प्रबंधन समिति का गठन किया जाए। राज्य स्तर पर वार्षिक आपदा जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।

शैक्षिक निहितार्थ

"आपदा प्रबंधन के अवलोकन की समझ के लिए विद्यालय शिक्षा में नागरिक शास्त्र का महत्व" विषय के अध्ययन से अनेक महत्वपूर्ण शैक्षिक निहितार्थ सामने आते हैं। यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि विद्यालय स्तर पर नागरिक शास्त्र केवल सामाजिक एवं राजनीतिक ज्ञान प्रदान करने वाला विषय नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों में सामाजिक उत्तरदायित्व, जागरूकता, सुरक्षा-बोध तथा आपदा की परिस्थितियों में उचित व्यवहार विकसित करने का एक प्रभावी माध्यम भी है। सबसे पहले, इस अध्ययन का शैक्षिक निहितार्थ यह है कि नागरिक शास्त्र के पाठ्यक्रम में आपदा प्रबंधन से संबंधित विषयवस्तु को अधिक व्यवस्थित एवं व्यावहारिक रूप से सम्मिलित किया जाना चाहिए। विद्यार्थियों को केवल सैद्धान्तिक जानकारी देने के बजाय भूकंप, बाढ़, आग, सूखा, महामारी एवं अन्य प्राकृतिक तथा मानव-जनित आपदाओं के समय अपनाए जाने वाले सुरक्षा उपायों की व्यवहारिक जानकारी भी दी जानी चाहिए। दूसरा महत्वपूर्ण निहितार्थ यह है कि विद्यालयों में आपदा प्रबंधन आधारित गतिविधियों, जैसे मॉक ड्रिल, आपातकालीन निकासी अभ्यास, प्राथमिक उपचार प्रशिक्षण, जागरूकता कार्यक्रम एवं समूह चर्चा को नियमित रूप से आयोजित किया जाना चाहिए। इससे विद्यार्थियों में संकट की स्थिति में त्वरित निर्णय लेने की क्षमता और आत्मविश्वास विकसित होगा। यह अध्ययन यह भी इंगित करता है कि नागरिक शास्त्र के माध्यम से विद्यार्थियों में सामाजिक उत्तरदायित्व एवं नागरिक कर्तव्यों के प्रति जागरूकता विकसित की जा सकती है। आपदा के समय सहयोग, अनुशासन, सामुदायिक सहभागिता तथा मानवीय सहायता जैसे मूल्यों का विकास शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य होना चाहिए। एक अन्य शैक्षिक निहितार्थ यह है कि शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भी आपदा प्रबंधन शिक्षा को सम्मिलित किया जाए, ताकि शिक्षक विद्यार्थियों को प्रभावी ढंग से प्रशिक्षित कर सकें। प्रशिक्षित शिक्षक विद्यालय को सुरक्षित एवं आपदा-संवेदनशील वातावरण प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अध्ययन के आधार पर यह भी कहा जा सकता है कि विद्यालय शिक्षा में नागरिक शास्त्र के माध्यम से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के जीवन-कौशल, अनुभवात्मक अधिगम और मूल्य-आधारित शिक्षा के उद्देश्यों को सशक्त रूप से लागू किया जा सकता है। अतः शैक्षिक दृष्टि से यह अध्ययन इस बात को स्थापित करता है कि नागरिक शास्त्र विषय विद्यार्थियों में आपदा प्रबंधन की समझ, जागरूकता, सुरक्षा व्यवहार तथा उत्तरदायी नागरिकता के विकास का एक अत्यंत प्रभावी माध्यम है।

ग्रंथसूची

1. एन.सी.ई.आर.टी. (2006). आपदा प्रबंधन. नई दिल्ली: राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद।
2. एन.सी.ई.आर.टी. (2020). सामाजिक विज्ञान (नागरिक शास्त्र), कक्षा IX–X. नई दिल्ली: राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद।
3. राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान (2015). आपदा प्रबंधन: प्रशिक्षण पुस्तिका. नई दिल्ली।
4. घोष, जी. के. (2008). आपदा प्रबंधन. नई दिल्ली: ए.पी.एच. पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन।
5. सिंह, के. के. (2006). भारत में आपदा प्रबंधन. नई दिल्ली: रूपा एंड कंपनी।
6. गोयल, एस. एल. (2007). आपदा प्रशासन एवं प्रबंधन. नई दिल्ली: दीप एंड दीप पब्लिकेशन।
7. गुप्ता, शशि के. (2010). आपदा प्रबंधन. नई दिल्ली: कल्याणी पब्लिशर्स।
8. धामा, ओ. पी. (2012). नागरिक शास्त्र का शिक्षण. आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।
9. अग्रवाल, जे. सी. (2010). शिक्षा में अनुसंधान की विधियाँ. नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस।
10. शर्मा, एम. एल. (2014). नागरिक शास्त्र शिक्षण विधि. मेरठ: राधा पब्लिकेशन।